आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-81 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त-सितंबर 2019 | मूल्य - 5 रूपए

सस्ते मोमोज, चाउमीन खा कर स्ट्रीट चिल्ड्रन पड़ रहे बीमार। कौन करेगा सुनवाई?

बातूनी रिपोर्टर: नबाव. भारती; रिपोर्टर: शम्भू, दीपक, किशन, ज्योति व अन्य

बालकनामा के पत्रकार ने विभिन्न स्थानों पर जाकर दौरा किया। जैसे कि दक्षिण दिल्ली, पश्चिम दिल्ली, नोएडा, गुरूग्राम, आगरा व लखनऊ। इन स्थानों पर बच्चों से बातचीत करने के बाद पता चला कि आप सब भी अपनी कार्यशाला से छुट्टी होने के बाद अपने दोस्तों के साथ मोमोज, चाऊमीन, रोल, आलू के फिंगर-फ्राई की दुकान पर जाते हैं और आप भी अपने दोस्तों के साथ मोमोज, चाऊमीन, रोल, आलू के फिंगर फ्राई खाने का लुफ्त उठाते हैं। लेकिन आपको क्या पता होना चाहिए कि जो आप खा रहे हैं, वह आपके शरीर के लिए कितना खतरनाक है। आप अनजान हैं। आपको इस विषय के बारे में बिलकुल भी जानकारी नही हैं। लेकिन इस बार हमारे पत्रकार ने इन सभी चीजों के बारे में पता किया है। आप इस खबर में जानेंगे कि मोमोज, चाऊमीन, रोल, आलू के फिंगर फ्राई हमारी सेहत के लिए कितने खतरनाक हैं। सबसे पहले हम आपको बता दें कि इस खबर में हम किसी कंपनी व किसी रोजगार व्यक्ति के खिलाफ आरोप नहीं लगा रहे हैं। हम सिर्फ सही जानकारियां बच्चों तक पहुंचना चाहते हैं, ताकि बच्चे व हमारा समाज सुरक्षित व स्वस्थ रह सके। हम बात कर रहे थे कि जो बाहर ज्यादातर सड़क के किनारे छोटे-छोटे मोमोज, चाऊमीन, रोल, आलू के फिंगर फ्राई की दुकान लगी हुई देखते हैं, इस संबंध में कुछ लोगो को मानना है कि यह व्यापार किसी भी अन्य व्यापार से काफी तेजी से चलता है; क्योंकि वर्तमानमके मोमोज, चाऊमीन, रोल, आलू के फिंगर फ्राई को काफी पसंद किया जाता है। वाकई यह खाद्य पदार्थ बहुत स्वादिष्ट होते हैं जिन्हें खाना लोग काफी पसंद करते हैं। हमारा पत्रकार जब इस विषय को लेकर बच्चों से बातचीत करने पहुंचा, तो हमें एक ऐसी बात का पता चला, जिसके बारे में आप भी सुनकर दंग रह जाएंगे। तो आईए इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं।हमारा पत्रकार जब बच्चों से; खासकर उन बच्चों से बातचीत किया, जो सड़कों पर कूड़ा-कबाड़ा बीनते हैं और मेट्रो स्टेशन पर गुलाब के फूल बेचते हैं या भीख मांगते हैं। इन बच्चों का कहना है कि मोमोज और चाऊमीन, इसके साथ जो चटनी मिलती है, वह हमें बहुत पंसद है। क्योंकि वह पदार्थ हमारे बजट के हिसाब से सही मिल जाते हैं। इसी तरह काफी बच्चों का कहना है कि हमें यह सब काफी पसंद हैं। इस विषय को लेकर पत्रकार काफी बैचेन था और यह जानने का प्रयास करने लगा कि आखिर ऐसा कौन सा पदार्थ डाला जाता है जिसकी वजह से मोमोज, चाऊमीन, रोल, आलू के फिंगर फ्राई के साथ खाने वाली चटनी का स्वाद काफी स्वादिष्ट हो जाता है। काफी बच्चों से बातचीत करने के बाद इस विषय के बारे में कुछ पता नहीं चल पाया। बच्चों के माध्यम से सिर्फ हमें इतना पता चला कि इस चटनी में लहसून, टमाटर और लाल मिर्च व पत्ता गोभी को उबालकर चटनी को तैयार किया जाता है। एक बात और पता चली कि अगर चटनी पानी की तरह हो जाती है तो उस चटनी में अरारोट का प्रयोग किया जाता है, ताकि चटनी गाढी नहीं हो सके; जिससे कि खाने वाले व्यक्तियों को और भी स्वादिष्ट लगे। लेकिन यह सब बात भी पत्रकार को ज्ञात होने के बाद संतुष्टि नहीं मिली। इसलिए पत्रकार कुछ और बच्चों से मिलने पहुंचे। पत्रकार आखिर काफी स्थानों पर बच्चों से बातचीत किया लेकिन फिर भी पत्रकार को इस विषय के बारे में कोई जानकारी अभी तक नहीं मिली है। सिर्फ इतना ही पता चला है कि टमाटर, पत्तेदार गोभी व लाल मिर्च और अदरक तथा लहसून का प्रयोग करने के बाद भी अगर चटनी स्वादिष्ट नहीं होती है तो दुकानदार कुछ कैमिकल का प्रयोग करते हैं। वह कैमिकल क्या है और किस स्थान से लाते हैं ? इसका पता लगा पाने में हम असक्षम रहे। हमें पुनः छानबीन के दौरान पता चला कि जो मास वाले मोमोज होते हैं, उन मोमोज में अस्वस्थ मुर्गो का प्रयोग किया जाता है जिससे कि आपके शरीर में कई प्रकार की खतनाक बीमारियां होने की संभावना रहती है। इसलिए बच्चों का कहना है कि आपलोग कम से कम ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन न करें, ताकि आप स्वथ्य और कुशलपूर्वक रहें।

हमारे स्वाथ्य के लिए हानिकारक

बच्चों ने बताया कि जब हम भूखे पेट चाऊमीन खाते हैं, तो हमारे पेट में दर्द होने लगता है; क्योंकि जिस स्थान पर हम बच्चे कामकाज कर रहे होते हैं, वहां सस्ती चीज कुछ नहीं मिलती है। सिर्फ चाऊमीन ही ऐसी चीज है, जो पांच-दस रुपए के मिल जाते हैं।

बच्चों ने बताया कि ज्यादातर मोमोज, चाऊमीन की दुकान सड़क के किनारे लगी होती हैं। सड़क से आने-जाने वाले वाहन की वजह से मोमोज, चाऊमीन की दुकान में काफी धूल, मिट्टी पड़ जाती है, जिसको खाने की वजह से हमारा स्वाथ्य खराब होने की संभावना रहती है ।

मोमोज, चाऊमीन के साथ, जो हमें चटनी दी जाती है, वह भी बहुत तीखी होती है और खाते समय हमारे मुंह में जलन होती है जिसकी वजह से अगर हम लगातार इस प्रकार के पदार्थ खाते हैं, तो जल्द-से-जल्द बीमार हो सकते हैं।

बच्चों ने बताया कि कुछ दुकानदार तो हमारे साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं कि वे कुछ दिन का बासी मोमाज होते हैं, वही हमें दे देते हैं। वह सोचते हैं, कि बच्चे को क्या पता चलेगा कि यह खराब है या सही ?

एक बच्चे ने हमें बताया कि हमने कई बार देखा है कि जो लोग फ्राई मोमोज मांगते हैं, तो उनमें तो कई तरह की समस्या है। जैसे कि काफी दुकानदार अच्छे तेल का भी प्रयोग नहीं करते हैं और जिस मोमोज को आप फ्राई करवा के खा रहे होते हैं, उन मोमोज के अंदर तेल चला जाता है, तो उन मोमोज को खाने के बाद पेट भी खराब होने की संभावना रहती है। इसकी वजह से आपको कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप सभी से निवेदन है कि इनका सेवन न करें और अपने आपको स्वस्थ रखें। सड़क एवं कामकाजी बच्चे इनका सेवन करते हुए दिखें, तो उन्हे रोकें और स्नेह से समझाने का प्रयास करें। आपका एक प्रयास कई बच्चों के स्वास्थ्य को खराब होने से बचा सकता है।

बच्चों के द्वारा घर-घर पहुंचा नशीला पदार्थ

बालकनामा ब्यूरो

आगरा के एक क्षेत्र में दौरा करने के दौरान पता चला कि छोटे-छोटे मासूम बच्चे नशीले पदार्थ की सप्लाई करने की ओर बढ़ रहे हैं। हम इस खबर के माध्यम से जानेंगे कि बच्चे किस प्रकार नशे की ओर बढ़ रहे हैं। आगरा का एक क्षेत्र, जहां ज्यादातर नशीले पदार्थों की सप्लाई की जाती है लेकिन हम उस स्थान का नाम इस खबर में गोपनीय रख रहे हैं। हमें पता चला कि इस स्थान पर गांजा, चरस, शराब आदि सभी प्रकार के नशीले पदार्थ लोग दूर-दूर से लेने के लिए आते थे लेकिन कुछ दिनों पहले एक ऐसे ही स्थान पर जहां इस प्रकार के नशीले पदार्थों की सप्लाई होनी शूरू हो गयी है जिसके कारण इस बस्ती वालों के पास नशा लेने के लिए लोग कम आने लगे थे। इसलिए लोगों ने अपनाया कि बच्चे अब लोगों को शराब उनके घर तक पहुंचाएंगे, तब हमारी

बिक्री बहुत अधिक होगी। तभी इन लोगों ने सोचा ऐसा काम कौन कर सकता है। आपस में सोच विचार करने के बाद इन लोगों ने फैसला लिया कि हम स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को मोहरा बनाएंगे और उन बच्चों से ही यह काम करवाएंगे। क्योंकि वह बच्चे हमेशा स्टेशन पर रहते हैं और उनके वस्त्र भी गंदे होते हैं। इसलिए उन बच्चों पर किसी को संदेह भी नहीं होगा। इसलिए यह लोग वर्तमान में स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को मोहरा बनाए हुए है और कुछ पैसे इन बच्चों को देते हैं, फिर यह बच्चे नशीले पदार्थ को, जो वह मंगाते हैं, उनके घर तक छोड़कर जाते हैं। लेकिन बच्चों का कहना है कि बेशक हम यह कामकाज कर रहे हैं लेकिन हमें बहुत भय लग रहा है कि कहीं हम गलत संगत में न पड़ जाएं। लेकिन अब हमारा यह सप्लाई करना मजबूरी बन गया है; क्योंकि अगर हम यह काम नही करते हैं, तो हमें खाने-पीने का खर्च चलाने में बहुत परेशानी होती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संपादकीय

नमस्कार। बालकनामा सड़क एवं कामकाजी बच्चों का एक अनोखा अखबार है। इसका 81वाँ अंक आपके हाथों में सौंप कर हमें बेहद खुशी हो रही है। इसमें छपने वाली खबरों के माध्यम से देश और समाज में हो रही गतिविधियों को पढ़कर आप हमेशा प्रसन्न होते हैं। लेकिन समाज में आयेदिन कोई ना कोई हादसे होते रहते हैं, इनसे सड़क एवं कामकाजी बच्चों की भावनाओं को काफी ठेस पहुंचती है। इस अंक में हमें आपको यह बताते हुए दुख हो रहा है कि वर्तमान में लोग मोमोज, चाऊमीन की ओर काफी तेजी से बढ़ रहे हैं, जो हमारी सेहत के लिए काफी हानिकारक हैं। क्योंकि हमारे पत्रकार ने दौरा किया और जाना कि किस प्रकार मोमोज और चाऊमीन में कैमिकल का प्रयोग किया जा रहा है। इसलिए आप सभी से यह निवेदन है कि इस तरह के पदार्थ नहीं खाएं और अगर कोई सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी इनका सेवन करते नजर आएं, तो उन्हें भी सावधान करें, ताकि उस बच्चे की सेहत भी ठीक रह सके। इसी तरह जुड़े रहिए और काम करते रहिए सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अखबार के साथ। धन्यवाद।

बालकनामा टीम

आधार कार्ड बना बच्चों के लिए गंभीर समस्या का विषय

सलाहकार शन्नों , रिपोर्टर दीपक

रैन बसेरो में सामाजिक संस्था के द्वारा आधार कार्ड कैंप लगाया गया जिसमें रैन बसरे व झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों का आधार कार्ड बनाया गया। लेकिन जिन सामाजिक संस्था के कार्यकताओं ने बच्चों का आधार कार्ड बनाया था उन सभी कार्यकताओं ने बच्चों का पुराना दस्तावेज को ना देखते हुए नए आधार कार्ड बना डाले जो स्कूल व अन्य दस्तावेज से अलग है जैसे कि बच्चों के माता-पिता के नाम अलग है तथा बच्चे का नाम आधा अधूरा है इसके अलावा बच्चों ने अपनी मुंह जुबानी खुद इस बात को कहा है कि हमारे माता-पिता के नाम हमारे आधार कार्ड में जो लिखे गए है वो बिल्कुल नहीं मिलते है और माता पिता के आधार कार्ड के अनुसार देखेंगे तो उनके नाम हमारे आधर कार्ड से बिल्कुल अलग है यदि किसी में नाम ठीक है तो किसी में हमारी उम्र गलत डाली गई और अगर नाम व उम्र दोनो ही ठीक है तो वहां हमारे नाम के शब्द विन्यास ठीक नहीं लिखे गएं हैं और एक बात सामने निकलकर आई कि परिवार में प्यार में जिस भी नाम से बच्चे को पुकारा जाता है अधिकतर माता पिता ने वही नाम आधार कार्ड में लिखवा डाले इसके साथ साथ हमारी जन्मतिथी और घर का पता दोनो बिना जांच किए आधार कार्ड में लिखा गया है इसलिए अब बच्चो को स्कूल में दाखिला लेने में बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ! क्योंकि आप सभी जानते है कि हर सरकारी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों के लिए अब हमारी सरकार कुछ पैसे देती है ताकि वह बच्चा स्कूल में उपयोग करने वाली चीजों कुशलपूर्वक खरीद सके और अपने भविष्य में आगे बढ़ सके । लेकिन जब आधार कार्ड में जन्मतिथी ही पुराने वाले दस्तावेज से अलग होगा तो कैसे बच्चों को बैंक काऊंट ओपन हो सकते है और कैसे यह सभी बच्चे इन सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे? इनके बैंक खाते अब कैसे खुलेंगे ? इतना ही नही कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनको स्कूल में दाखिला हुआ ही नही है यह बच्चे आशा में है जल्द-जल्द इनका आधार कार्ड में भूल सुधार हो जिसकी वजह से यह बच्चे स्कूल जा सके और स्कूल में मिलने वाले हर सुविधा का आनंद उठा सके । सामाजिक संस्था कार्यकताओं के एक लापरवाही की वजह से बच्चों को इन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

- कुल 132 बच्चों का आधार कार्ड बनाया गया ।
- 43 बच्चों के आधार कार्ड कार्यलय द्वारा रिजेक्ट कर दिए गए।
- 89 बच्चों के बने आधार का र्ड जो पहले वाले दस्तावेजो से मेल नही खा रहे है ।
- 45 बच्चों का स्कूल में दाखिला हलफनामो के द्वारा करवाया गया ।

चर्चा में आया है कि अध्यापक द्वारा संस्था के कार्यकताओं को 2 माह का समय दिया गया बच्चों के आधार कार्ड में भूल सुधार करने के लिए यदि ऐसा न किया गया तो स्कूल से बच्चे का दाखिला रद् किया जा सकता है। इन सभी बातचीत के बाद बच्चों का कहना है कि इस समस्या के चलते सभी बहुत परेशान हो रहे है बच्चों की अपील है कि हमारे साथ हमारे माता पिता के भी जल्द आधार कार्ड में सुधार किया जाए जिससे उन्हें आने वाले समय में और परेशानी का सामना ना करना पड़े । कार्यालयों के द्वारा इस समस्या को लेकर जल्द बातचीत होनी चाहिए तथा इस समस्या का समाधान भी किया जाना चाहिए।

बस्ती में बना दी जाए दीवार

बातूनी रिपोर्टर: रीया व रिपोर्टर: शम्भू, गुरूग्राम

जलवायु टावर के पास बसी एक बस्ती, जहां लगभग 1000 से 1500 तक झुग्गी झोपड़ी हैं। ये लोग ऐसे स्थानों से आए हैं, जहां पर कमाने-खाने का कोई माध्यम नहीं था। इसलिए लोग इस बस्ती में आकर रहने लग गए और अपने परिवार के गुजारा के लिए दूसरे के घरो में झाड़ू-पोछा का काम करने लगे। वर्तमान में इस बस्ती के निवासी बड़े संकट में हैं। बस्ती में रहने वाले बच्चों ने बताया कि हमारी बस्ती के पास कोयले का बड़ा ट्रक आता है। जैसा कि इस खबर के चित्र में दिखाया गया है। दुख की बात यह है कि जब-जब ट्रक से कोयले का उतार-चढ़ाव करते हैं, तो कोयले की धूल काफी निकलती है, जिसकी वजह से बस्ती में रह रहे बच्चों को सांस लेने में काफी तकलीफ होती है। बच्चों का कहना है कि जब ट्रक में कोयले का उतार-चढ़ाब करते हैं, तो उससे निकलने वाली धूल की वजह से हमारी झुग्गी काली पड़ जाती है। हमारे माता-पिता सुबह भोजन बनाकर अपने-अपने कामकाज के लिए घरों से बाहर चले जाते हैं, तो अगर कभी हम बच्चे गलती से जिस बर्तन में पका हुआ भोजन रखा हुआ होता है, उसे यदि बिना ढ़के रखे हैं तो उसमें कोयले की धूल मिल जाती है। हमारे वस्त्र भी इस कोयले की धूल की वजह से काले हो जाते हैं। सांस के माध्यम से यह धूल हमारे शरीर में अंदर प्रवेश कर जाती है। इससे कई तरह की बीमारियां भी फैल रही हैं। इस प्रकार बातचीत करते हुए बच्चों ने बताया कि जब से हमारी बस्ती के निकट ट्रक कोयले लेकर आने जाने लगा है, तब से हमारा जीना दुश्वार हो गया है। बच्चों ने बताया कि भूतकाल में यह कोयले के ट्रक हमारी झुग्गी से काफी दूरी पर आते थे। काफी दूरी पर ही इस प्रकार का काम होता था लेकिन बस्ती के निकट आने के कारण हम बच्चे बहुत परेशानी में पड़ चुके हैं। इस विषय को लेकर हमारे माता-पिता ने ठेकेदार से भी बातचीत की थी लेकिन अभी तक ठेकेदार ने भी इस परेशानी का कोई हल नहीं निकाला है। इस खबर के माध्यम से हम बच्चों का आप पाठकों से निवेदन है कि कोई हमें इस संकट से बचाने में हमारी मदद करे, ताकि हम बस्ती वाले स्वस्थ रहकर प्रदूषण मुक्त वातावरण में जी सकें। यह खबर हमने दोबारा प्रकाशित की है, क्योंकि इस बस्ती में रहने वाले बच्चों की समस्या बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान में काफी गर्मी भी पड़ रही है अगर धूल उडती है, तो धूल बच्चों के मुंह में चली जाती है जिस वजह से बच्चों को बहुत तेज खांसी होती है। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि जितने भी भाग मे कोयले का कार्य हो रहा है, उसे किसी चीज के सहयोग से घेरा लगा दिया जाए, ताकि बस्ती में धूल नहीं आ सके।

कैसे मिलेगा; बस्ती निवासियों को बंदरों से छुटकारा?

बातूनी रिपोर्टर: किशन व रिपोर्टर: पूनम

आगरा की एक बस्ती में बातूनी रिपोर्टर के साथ हमारा पत्रकार सपोर्ट ग्रुप मींटिग किया, जिस में सभी बातूनी रिपोर्टरों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और वर्तमान में हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की कि वर्तमान में बस्ती में रहने वाले बच्चे किस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं? रिपोर्टरों ने बताया कि हमारी बस्ती में एक कठिन समस्या

आ गई है। जैसे कि बस्ती से काफी दूर एक मंदिर है, वहां पर कुछ बंदर रहते थे, जो भी लोग मंदिर में पूजा-पाठ करने के लिए जाते थे, तो उन बंदरो के लिए कुछ न कुछ खाने के लिए देकर ही जाते थे लेकिन धीरे-धीरे बंदरों की संख्या बढ़ती गयी और वर्तमान में यह बंदर बस्ती में भी आने लगे हैं जिसकी वजह से बस्ती में रहने वाले बच्चे तथा उनके माता-पिता कुशलपूर्वक नहीं रह पा रहे हैं। बस्ती में रहने वाले लोगों का कहना है कि हम जब भी कुछ चीज खाने के लिए बना रहे होते हैं, तो बंदर आ जाते हैं और वह उस चीज को खराब कर देते हैं।

बच्चों का कहना है कि जब हम किसी प्रकार के फल या समोसे खा रहे होते हैं, तो बंदर छीन कर भाग जाते हैं। इसलिए बस्ती में रहने वाले लोग काफी भयभीत हैं। दो सप्ताह पहले एक बंदर ने एक बच्चे के हाथ से केला छीन लिया था, इस वजह से उस बच्चे के हाथ पर बंदर का नाखून लग गया था, जिसकी वजह से उस बच्चे के माता-पिता डर गये थे। बस्ती से काफी दूरी पर अस्पताल है, वहां उस बच्चे को ले जाया गया, अब वह बच्चा ठीक है। बस्ती निवासियों का कहना है कि इन सभी बंदरो को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाया जाए; ताकि हम बस्ती निवासी कुशलपूर्वक रह सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

घर का खर्चा चलाने के लिए बच्चे करते हैं, कई कठिनाईयों का सामना

रिपोर्टरः शम्भू

ईस्ट दिल्ली में जब हमारे पत्रकार ने बढ़ते कदम के सदस्यों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की। सभी सदस्यों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और अपनी-अपनी परेशानी के बारे में जिक्र करते हुए बताया कि वह किस प्रकार अपने जीवन में परेशानियों का सामना कर रहे हैं। कुछ बच्चों का कहना है कि इस बस्ती में रहने वाले सभी बच्चे कामकाजी हैं लेकिन लोगों को दिखाई नहीं देते हैं। क्योंकि यह बच्चे अपने-अपने घर के अंदर माता-पिता के साथ काम करते हैं और सुनने में आया जिस काम को यह कर रहे हैं, वह काम करना बच्चों के लिए बहुत ही कठिनाईदायक है; क्योंकि इन कामों की वजह से इनकी आंखो में दर्द भी होने लगता है। ऐसा क्यों होता है, आईए सुनते हैं इन्ही बच्चों से। 13 वर्षीय एक बालक ने बताया कि कंपनी से थोक में जीन्स के पेन्ट आते हैं, फिर हम लोग जीन्स के पेन्ट पर सितारे चिपकाने का काम करते हैं, जो हम बच्चों की आंखों के लिए बहुत खतरनाक साबित हो रहे हैं। जैसा कि 14 वर्षीय बालिका का कहना है कि भईया जब हम तीन चार घंटे लगातार जीन्स के पेन्ट पर सितारे चिपकाते हैं, तो हमारी आंखो में से पानी निकलने लगता है और पूरे शरीर में दर्द होने लगता है। लेकिन हम क्या करें, घर की परिस्थिति खराब होने के कारण हमें यह काम करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

किसी और के गुनाह की सजा हमें क्यों?

बालकनामा ब्यूरो

हमारे पत्रकार ने रेलवे स्टेशन पर एक दौरा किया। इस दौरान स्टेशन पर कामकाज करने वाले बच्चों ने पत्रकार के सामने अपनी परेशानी रखते हुए कहा कि जब भी स्टेशन पर काम करने वाले पुराने कर्मचारियों की पोस्टिंग किसी दूसरे स्थान पर होती है और उसके बदले में नए कर्मचारी स्टेशन पर आते हैं, हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। क्योंकि पुराने कर्मचारी हम बच्चों को अच्छी तरह से जानते थे कि हम बच्चे अपनी मजबूरी में स्टेशन पर कामकाज करने के लिए आते हैं लेकिन नए वाले कर्मचारी को लगता है कि यह पेशा है और वे हम पर अत्याचार करते हैं। बच्चों ने बताया कि जैसे कि स्टेशन पर कुछ बड़े लोग चोरी-चकारी करते हैं लेकिन उन बड़े लोगों की सजा हम बच्चों को मिल रही है। क्योंकि यह दुष्ट लोग जो चोरी-चकारी करते हैं और हम जैसे कामकाज करने वाले बच्चों पर इल्जाम लगा देते हैं। हम कुछ कह भी नहीं पाते हैं। नए कार्यचारी भी हमारा साथ नहीं देता है और अगर पुलिस वाले भईया के पास शिकायत लेकर जाते हैं, तो वह भी हम पर ही शक करते हैं और डांट-धमका कर भगा देते हैं। इस परेशानी से जूझ रहे बच्चों का कहना है कि हम जानते हैं कि बच्चों को स्टेशन पर कामकाज नहीं करना चाहिए, लेकिन हमारी एक मजबूरी है, इसलिए हम कामकाज करते हैं। अगर हम बच्चों पर इस तरह का व्यवहार करेंगे, तो हमारे परिवार का गुजारा कैसे होगा? इसलिए बच्चे चाहते हैं कि जो दुष्ट व्यक्ति गलत काम करते हैं, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करें और हम जैसे बच्चों पर कृपया इस तरह का आरोप न लगाएं।

आखिर हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों?

रिपोर्टरः ज्योति

रेलवे स्टेशन पर कामकाज करने वाले बच्चों के साथ पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की, जिसमें स्टेशन पर रहने वाले काफी बच्चों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और पत्रकार के सामने अपनी परेशानी को बताते लगे। एक 15 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे पूरे दिन कड़ी मेहनत करके कुछ बोतलें जमा करते हैं, फिर हम इन बोतलों को उचित दामो में नहीं बेच पाते हैं। बच्चों से गहराई से बातचीत करने पर पता चला कि इन मासूम बच्चों को रहने के लिए घर नहीं, इसलिए कुछ बच्चे स्टेशन पर ही सो जाते हैं और कुछ गोदामों पर रहकर अपनी रात गुजारते हैं। यह मासूम बच्चे जिन गोदामों पर रह रहे हैं, उन गोदामों वाले दुष्ट व्यक्ति गलत फायदा उठाते हैं। क्योंकि सुनने में आया है कि यह गोदाम वाले रात को बच्चों को खाना-पीना देते हैं और इन बच्चों के दिल में स्नेह जगाते हैं, ताकि यह दुष्ट गोदाम वाले बच्चों से कामकाज करा सकें। यह बच्चे सुबह तीन बजे उठकर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। काफी मेहनत करने के बाद वे कुछ बोतलें लेकर वापस लौटते हैं, तो इन बच्चों के साथ धोखाधड़ी करते हैं। जैसे कि दूसरे गोदाम वाले 50 रुपए किलो बोतलें लेते हैं लेकिन जिस गोदाम पर यह मासूम बच्चे रह रहे हैं, वह इन से 30 रुपए प्रति किलो बोतलें लेते हैं, जिसकी वजह से बच्चे बहुत परेशान हैं। बच्चों ने जब उन गोदाम वालो से बातचीत की तो उन्होंने बच्चों को डांटते हुए कहा कि एक तो तुम्हें रहने के लिए स्थान दिया, खाना पीना भी देता हूं और बोला कि जब तुम बोतलें बीनकर लाते हो, उनमें से आधा से ज्यादातर बोतलों में तो पानी भरा हुआ रहता है। इसलिए हम तुम्हारे साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं। ज्यादा बोलने पर बच्चों को अपने गोदाम पर रहने नहीं देते हैं। स्टेशन पर भी कबाड़ा बीनते दिखाई देते हैं तो गाली-गलौज से बातचीत करते हैं। इस से बच्चे काफी परेशान हैं। बच्चे चाहते हैं कि बच्चों पर अत्याचार करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ जल्द-से-जल्द कार्यवाही हो।

लाचार होकर लड़कियों ने की यह अपील

रिपोर्टरः पूनम

आगरा में कुछ लोग ऐसे भी लोग रहते हैं, जो आयेदिन कामकाज के लिए बाहर जाते हैं और कुछ लोग ऐसे हैं, जिनको खाना बनाने के लिए समय तक नहीं मिल पाता है। इसलिए किसी न किसी मजदूर की तलाश करते हैं, ताकि खाना बनाने में उनका सहयोग मिल सके। लेकिन दुख की बात यह है कि खाना बनाने व घर का साफ-सफाई करने में यह लोग इतना पैसा नहीं देते हैं कि अगर कोई व्यक्ति इनके घर पर काम करने भी आए, तो उस पैसे से कुशलपूर्वक जिदंगी गुजर कर सके। खाना बनाने व घर की साफ-सफाई का कार्य खास कर औरतें व लड़की ही करती हैं। इस काम में पैसा कम होने की वजह से औरतें और लड़कियां ही घरों में कामकाज करने के लिए जाती हैं। लेकिन सभी घर का समय अलग-अलग होता है। कोई शाम को बुलाते हैं और कोई दिन में। इस प्रकार कड़ी मेहनत करते हैं। यह सुनने में आया है कि जिस बस्ती से यह लोग कामकाज करने के लिए जाते हैं वह जगह काफी दूर होती है। शाम के समय काम को खत्म करते हुए रात हो जाती है। देर रात बस्ती जाते समय रास्ते में सुनसान हो जाता है। रास्ते में नशे में लिप्त व्यक्ति इन्हें रोक कर परेशान करता है। कभी-कभी तो इनके शरीर पर रखे हुए दुपट्टा भी खींच लेता है और अश्लील शब्दों का प्रयोग करता है। इसलिए लड़कियां बहुत भयभीत हैं। लड़कियां चाहती हैं कि सड़क पर लाईट का प्रबंध किया जाए और पुलिस की गश्त उस स्थान पर बढ़े और इस प्रकार का बर्ताव करने वाले व्यक्ति को सख्त-से-सख्त सजा दी जाए, ताकि देर रात को भी हम सुरक्षित आ-जा सकें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

क्या ऐसा हो पाएगा?

बातूनी रिपोर्टरः अमन व रिपोर्टरः दीपक

पत्रकार ने जब पूर्वी दिल्ली में एक स्थान, बुलंद मजिद, शास्त्री पार्क जैसी जगहों पर जाकर वहां पर रह रहे बच्चों से बातचीत की और बच्चों से पूछा कि आप लोगों को यहां किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है ? बच्चों ने बताया कि हमारे यहां जगह-जगह गलियो में नाले खुले हुए हैं। उनमें काफी गंदगी भी है और वह नाले काफी बडे बड़े हैं। उस नाले में बहुत गंदगी होती है और उस खुले नाले में से बहुत तेज बदबू भी आती है जिसकी वजह से इस स्थान पर रहने वाले बच्चों को बहुत परेशानी हो रही है। इस परेशानी से जूझते हुए बच्चों का कहना है कि अक्सर छोटे-छोटे बच्चे खेलने के दौरान उस नाली में गिर जाते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि यह नाले हम बच्चों के लिए बहुत खतनाक हो गए हैं। क्योकि कई बार हमारे महत्पूर्ण सामान भी इस नाले में गिर चुके हैं। इनको निकालते समय हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। जैसे कि आप सभी तो जानते ही हैं कि नाले में से किस प्रकार से बदबू आ रही होती है। जब हम बच्चे उस नाले में जाते हैं तो नाले के अंदर हमारा दम घुटने लगता है। इसलिए हम अपना सामान जल्द जल्द से जल्द निकालते हैं और कोशिश करते हैं कि उस नाले में से जल्दी बाहर आ सकें। लेकिन ऐसा नहीं हो पाता है। कभी-कभी हमारा सामान उस नाले में से निकल ही नहीं पाता है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि इस स्थान पर से नाले को बंद कर दिया जाए, ताकि हम बच्चे इस परेशानी से मुक्ति पा सकें।

क्या बच पाएंगी यह मासूम लड़कियां; इस दुष्ट के चंगुल से ?

बालकनामा: ब्यूरो

यह खबर एक बस्ती की है। बच्चों की सुरक्षा की दृष्टि से हम इस खबर में उस स्थान का नाम गोपनीय रख रहे हैं। सिर्फ हम उन बच्चों की परेशानी आप तक पहुंचाना चाहते हैं। हम इस खबर के माध्यम से किसी भी व्यक्ति के हदय को ठेस नही पहुंचाना चाहते हैं, सिर्फ उन बच्चों की आवाज़ आप तक पहुंचाने का यह हमारा एक प्रयास है। हमें पता चला कि इस बस्ती में रहने वाले सभी माता-पिता कामकाज करने के लिए बाहर चले जाते हैं जिसकी वजह से उनके बच्चे घर पर अकेले ही रहते हैं, जिसका फायदा कुछ दुष्ट शराब पीने वाले व्यक्ति उठाते हैं।

बच्चों का कहना है कि वह दुष्ट व्यक्ति बस्ती में आने के बाद खासकर लड़कियों के साथ बातचीत करने का प्रयास करता है और जब लड़कियां बातचीत करना नहीं चाहती हैं, तो उन्हे कुछ पैसे की लालच देकर लड़कियों को बोलते हैं कि आओ मेरे पास। कुछ लड़कियां, जिन्हे अभी उतनी समझ नहीं है, वह पैसों की लालच में आकर चली जाती हैं, फिर वह दुष्ट व्यक्ति उन लड़कियों के व्यक्तिगत पार्टों को; जहां उस व्यक्ति को नहीं छूना चाहिए, वहीं वह दुष्ट व्यक्ति स्पर्श करता है। इस वजह से लड़कियां काफी परेशान हैं। लेकिन कुछ इसी बस्ती में बड़ी हो रही लड़कियां, जो पूरे दिन इधर-उघर घूमती रहती हैं, वह कुछ काम नहीं करती हैं, वह उस दुष्ट व्यक्ति के चंगुल में फंस कर गलत काम की ओर भी बढ़ रही हैं। उन लड़कियों का कहना है कि यह अंकल बहुत अच्छा है; क्योंकि उन लड़कियों का कहना है कि व्यक्तिगत पार्टों को स्पर्श करने के बदले कुछ पैसे तो देते हैं लेकिन कुछ लड़कियां उस दुष्ट व्यक्ति के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करवाना चाहती हैं, ताकि लड़कियां अपनी बस्ती में सुरक्षित रह सकें।

क्यों भटके; सड़क एवं कामकाजी बच्चे दर दर?

रिपोर्टर: दीपक

बालकनामा का पत्रकार जब सड़क व कामकाजी बच्चों से पश्चिमी दिल्ली के अलग-अलग स्थान पर जाकर मिले, तो कुछ इस तरह की परेशानियां निकल कर आईं। कुछ बच्चों ने बताया कि हमारी झुग्गी तिरपाल से बनी हुई है और कुछ बच्चों के पास तो घर ही नहीं है। उन बच्चों का परिवार बहुत बड़ा होता है, जैसे कि 5 से 6 सदस्य। इन लोगों की परेशानी है कि जहां रहते हैं, उस स्थान पर पीने के पानी के बहुत कम साधन हैं। इसलिए बच्चों को दर-दर भटकना पड़ता है। लेकिन दुख की बात यह है कि दर-दर भटकने के बाद कुछ बोतलें पानी मिल भी जाता है, तो आजकल अधिक गर्मी पड़ने के कारण पीने का पानी अधिक गर्म हो जाता है जिसकी वजह से उस पानी को पीने के बाद भी प्यास नहीं बुझती है। बच्चों ने बताया कि यह भी पानी बहुत मुश्किल से मिलता है। प्रति लीटर पानी 20 रुपए का मिलता है। बच्चों ने बताया कि हमारे परिवार को एक दिन में 150 से 200 रुपये तक का पानी खरीदकर मजबूरी में पीना पड़ता है। इस परेशानी से जूझते हुए बच्चे दिल्ली जल बोर्ड से गुहार लगा रहे हैं, ताकि इन बच्चों को स्वच्छ पीने का पानी मिल सके और इस परेशानी से झुटकारा पा सकें। साथ ही बच्चों की अपील है कि जहां-जहां पर सड़क एवं कामकाजी बच्चे रहते हैं, वहां पर दिल्ली जल बोर्ड के सहयोग से पीने के पानी की व्यवस्था की जाए, ताकि बच्चे पीने के पानी के लिए दर-दर न भटकें।

बड़े लड़कों का आत्याचार; छोटे बच्चों को रहना पड़ा भूखे पेट

रिपोर्टर: शम्भू

गुरूग्राम की एक बस्ती में रहने वाले बच्चों से जब हमारा पत्रकार बातचीत किया तो पता चला कि वर्तमान में उन्हें स्कूल जाने में बहुत कठिनाईयों से गुजर कर जाना पड़ता है। 12 वर्षीय बालक ने अपनी भूतकाल स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहा कि भईया आप तो जानते हो किस प्रकार हमारे माता-पिता ने स्कूल में दाखिला करवाया था। लेकिन वर्तमान में जिस प्रकार हमारे साथ अत्याचार हो रहे हैं हमे खुद नहीं मन करता है कि हम स्कूल जाएं। फिर भी हम स्कूल जा रहे हैं। बातचीत करने पर पता चला कि जब यह छोटे-छोटे बच्चे स्कूल जा रहे होते हैं, तो इनको रास्ते में कुछ बड़े लड़के परेशान करते हैं। जब बच्चों से पूछा कि वह किस प्रकार परेशान करते हैं, तो बच्चों का कहना था कि भईया हम सभी बच्चों के माता-पिता सुबह ही कामकाज के लिए निकल जाते हैं। इसलिए वह हमारे लिए टिफिन तैयार नहीं कर पाते हैं। इसलिए हमारे माता-पिता कुछ पैसे दे देते हैं, ताकि हम स्कूल से लौटने के बाद उन पैसों से चीज खा सकें। स्कूल में तो मिड डे मील मिलता है, उससे हमारा पेट भर जाता है। लेकिन स्कूल से लौटने के बाद हमें शाम को भूख लगती है, तो हम उसी पैसे का इस्तेमाल करते हैं। अब हम बच्चे ऐसा नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि यह बड़े लड़के हम बच्चों से पैसे छीन लेते हैं। जब हम बोलते हैं आप हमारे साथ ऐसे क्यों करते हो, तो मारने के लिए दौड़ते हैं। इसलिए हम बच्चे पिटाई से बचाने के लिए पैसे दे देते हैं और हमें मजबूरन भूखे पेट रहना पड़ता है।

लोग कर रहे हैं दुर्व्यवहार; कैसे मिलेगी इससे आजाद़ी

रिपोर्टर: किशन

नोएडा की एक बस्ती; जहां काफी सारी झुग्गी झोपड़ियां हैं। इस स्थान पर रहने वाले लोग भूतकाल में बिहार, उत्तर प्रदेश व कोलकाता में रहते थे। लेकिन अति गरीबी होने के कारण यह लोग वर्तमान में नोएडा में झुग्गी किराए पर लेकर कोठियों में कामकाज कर रहे हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि जिस परेशानी से मुक्ति पाने के लिए ये लोग नोएडा आए थे, उस परेशानी से मुक्ति मिली नहीं और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। सबसे बड़ी परेशानी इनकी बस्ती में पानी की है। लोग काफी दूर दूर से पानी लाते हैं और फिर इस्तेमाल करते हैं। इन समस्याओं से भी एक बड़ी समस्या सामने आयी कि इस बस्ती में किसी प्रकार के साधन नहीं हैं। पुरूष लोग खुले में स्नान करते हैं, तो कोई परेशानी नहीं होती है। इसी परेशानी से जूझते हुए बस्ती निवासियों ने कपड़े और तिरपाल के सहयोग से एक स्नान घर बनाया है, ताकि महिलाएं और लड़कियां सुरक्षित स्नान कर सकें। इस बस्ती के आस-पास कुछ दुष्ट लोग हैं, जो लड़कियों के स्नान करते समय ताक-झांक करते रहते हैं। लड़कियों के स्नान करके घर वापस जाते हुए देख कर अश्लील बातें बोलते रहते हैं। इस वजह से बस्ती में रहने वाली लड़कियां काफी परेशान हैं। सभी लड़कियां चाहती हैं कि इस परेशानी से उन्हें जल्द से जल्द आजाद्री मिले। इस प्रकार का दुर्व्यवहार करने वाले व्यक्ति पर सख्त कार्यवाही की जाए।

क्या लग पाएगी नशे पर पाबंदी?

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा का पत्रकार दक्षिणी दिल्ली के एक स्थान पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ बैठक किया। इस बैठक में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और हो रही समस्यों के बारे में विस्तार से बताया कि वर्तमान में बच्चे किस प्रकार से अपनी जिदंगी व्यतीत कर रहे हैं। एक बच्चे ने अपने बारे में जानकारी देते हुए कहा कि हम बच्चे रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि वर्तमान में किस प्रकार से गर्मी का तापमान प्रति दिन बढ़ते ही जा रहा है। इस तापमान के बढ़ने की वजह से हम बच्चों को बहुत परेशानी हो रही है। बच्चों ने बताया कि हममें से कुछ बच्चे स्टेशन पर नहीं रहते हैं। वह रैन बसेरे व पुल के नीचे रहते हैं। लेकिन जब यह बच्चे स्टेशन पर कुछ बच्चों को नशा करते हुए देखते हैं और वह बच्चे बहुत परेशानी में नजर आते हैं। क्योंकि नशा करते समय इन बच्चों के शरीर में किस प्रकार से असर पड़ रहे होंगे। एक तो बढते. तापमान का सामना कर रहे हैं और जब यह बच्चे नशा ले रहे होते हैं, तो इनके शरीर के अंदर किस प्रकार गर्मी फैल रही होगी, जिसकी वजह से स्टेशन पर रहने वाले बच्चे अक्सर बीमार पड़े हुए नजर आ रहे हैं। इसलिए बच्चे चाहते है कि नशे पर पूरी तरह से पाबंदी लगाई जाए; ताकि बच्चे इस तरह की परेशानियों से मुक्ति पा सकें।

पत्रकार ने किया; माता-पिता को जागरूक

रिपोर्टर: किशन

सूचना के अनुसार पता चला कि कुछ स्थानों पर बच्चे गायब हुए हैं। यह कौन दुष्ट व्यक्ति हैं, जो बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार कर रहे हैं। हम इस खबर के माध्यम से माता-पिता को यह संदेश पहुंचाना चाहते हैं कि जिस प्रकार वह अपने बच्चों को छोड़कर कामकाज के लिए जाते हैं; या जब बच्चे पार्क या इधर-उधर खेलने के लिए जाते हैं, तो वह अपने बच्चों पर ध्यान नहीं रख पाते हैं। माता-पिता को लगता है कि उनका बच्चा खेलने के लिए गया है लेकिन कुछ घटना घट गयी, तो उनको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए हम पत्रकार इस खबर के माध्यम से आप सभी से यह निवेदन करते हैं कि आप अपने बच्चों को किसी के भरोसे व किसी के साथ व किसी स्थान पर खेलने के लिए न भेजें। हम इस खबर में किसी की भावना को ठेस नही पंहुचाना चाहते हैं। हम बस यही चाहते हैं कि आप अपने-अपने बच्चों को सुरक्षित रखें। क्योंकि हमें कुछ स्थानों से यह जानकारी इक्ट्ठी हुई है कि बच्चे गायब हो रहे हैं। गायब होने के बाद उनके बारे में कोई आता-पता नहीं रहता है। वह बच्चे किस प्रकार रह रहे हैं, उनके साथ क्या क्या होता है; कोई खबर नहीं आती है। इसलिए आप लोग जागरूक रहिए और अपने-अपने बच्चों को सुरक्षित रखिए।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बच्चों की परिस्थिति को देखकर माता-पिता ने लगायी गुहार

बातूनी रिपोर्टर: मुस्कान व दीपक

पश्चिम दिल्ली के एक स्थान पर बालकनामा के पत्रकार ने दौरा किया और बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर काफी गहराई से बातचीत की। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप लोगों को इस स्थान पर स्वास्थ्य को लेकर क्या-क्या परेशानी है ? बच्चों ने स्वास्थ्य को लेकर बताया कि भईया भूतकाल में हमारी बस्ती में बुरी तरह से आग लगने के कारण झुग्गियां पूरी तरह से जल कर राख हो गयीं, जिसके कारण हमारा पूरा सामान ही जल गया। हमारे परिवार में इतनी आमदनी नहीं है जिससे कि हम अपना गुजारा कर सकें। अपनी झुग्गी बना पाएं और सामान्य जरूरत का सामान खरीद पाएं। इसलिए हम लोगों ने छोटी सी झुग्गी बनाई और उस झुग्गी को पर्दा करने के लिए मुश्किल से एक तिरपाल डाल पाए। आप सभी को पता है कि वर्तमान में किस प्रकार से गर्मियों का तापमान बढ़ रहा है जिसकी वजह से इस झुग्गी में रहने वाले हम बच्चों की दशा दिन-पर-दिन खराब हो रही है। क्योंकि इस स्थान पर ऐसे नवजात शिशु

हैं, जो इसी बस्ती में रहते हैं लेकिन गर्मी अधिक पड़ने के कारण वह काफी रोते हैं जिसकी वजह से माताजी काफी परेशान होती हैं। वह अपने नवजात शिशु को संभालने के चक्कर में अपने लिए भोजन भी नहीं बना पाती हैं। इसकी वजह से उनके स्वास्थ्य पर काफी असर पड़ रहा है। इसलिए माता-पिता चाहते हैं कि इनके रहने के लिए कोई सुरक्षित स्थान प्रदान करें, ताकि यह अपने बच्चों के साथ सुरक्षित रह सकें।

कैसे करते है गर्मियों का; झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले बच्चे सामना ?

बातूनी रिपोर्टर: रिया व रिपोर्टर: शम्भू

गुरूग्राम की एक बस्ती में पत्रकार ने बातूनी रिपोर्टरों के साथ एक बैठक की। इस बैठक में सभी रिपोर्टरों ने वर्तमान में हो रही समस्याओं के बारे में विस्तार से बताया कि इस स्थान पर लगभग 300 से भी अधिक झुग्गी-झोपड़ियां हैं। इन झोपड़ियों में सबसे बड़ी समस्या है कि सभी झुग्गी-झोपड़ियां टीन की बनी हुई हैं। धूप पड़ने की वजह से झुग्गी में रहने का मन नहीं करता है लेकिन हम बच्चे कर भी क्या सकते हैं? माता-पिता कामकाज पर चले जाते हैं, तो हम बच्चे घर पर अकेले ही होते हैं, इसलिए हम बच्चे ज्यादातर घर से बाहर नहीं निकलते हैं। माता-पिता हमें बताते हैं कि घर से बाहर खेलने के लिए नहीं जाना। क्योंकि इस स्थान पर काफी सारे ऐसे लोग भी घूमते हैं, जो बच्चों का अपहरण करके ले जाते हैं। इसलिए हम घर से ज्यादातर बाहर नहीं जाते हैं जिसकी वजह से हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। जैसे कि हमारी बस्ती में बिजली है। भूतकाल में बिजली नहीं

थी लेकिन वर्तमान में बिजली आ गयी है। लेकिन बिजली होने का कोई फायदा नहीं है; क्योंकि बिजली का वोल्टेज बहुत कम रहता है, जिससे पंखा भी इतना तेज नहीं चलता है कि हवा हमारे शरीर तक भी आ पाए। इस गर्मी से बचने के लिए हम किसी पेड़ पौधे के पास जाते हैं, तो हमारे माता-पिता बहुत गुस्सा होते हैं। इसलिए परेशानी से आजाद्री पाने के लिए हमारे माता-पिता ने ठेकेदार से बातचीत की, लेकिन हमारे ठेकेदार ने भी हमारी परेशानी नहीं सुनी। अब हम चाहते हैं कि इस स्थान से झुग्गी-झोपड़ी खाली करके किसी दूसरे स्थान पर चले जाएं। लेकिन मजबूरी यह है कि अगर हम ऐसा किए तो हमारे कमाने-खाने का जरिया भी खत्म हो जाएगा। इसलिए हम चाहते हैं कि वोल्टेज को इतना कर दिया जाए, ताकि हम इस गर्मी से निजात पा सकें।

आखिर क्यों जी रहे हैं; इस बस्ती के निवासी भयभीत जिंदगी ?

रिपोर्टर: शम्भू

यह खबर गुरूग्राम की एक बस्ती की है। इस बस्ती में काफी सारी झुग्गी-झोपड़ी हैं। इस बस्ती में रहने वाले सभी लोग कामकाज करने वाले हैं। इसी कामकाज की तलाश में यह लोग अपने-अपने गांव-घर छोड़कर इस स्थान पर रह कर गुजारा कर रहे हैं। सुनने में आया कि इस स्थान के ठेकेदार सही नहीं है। वह झुग्गी तो बना दिया है लेकिन झुग्गी में किसी प्रकार के साधन नहीं हैं। जैसे कि हम बात करें, तो इस स्थान पर बिजली का रहना जरूरी है। क्योंकि इस स्थान पर सभी झुग्गी-झोपड़ी टीन की बनी हुई हैं। वर्तमान में इतनी गर्मी पड़ रही है कि इन झुग्गी-झोपड़ी में रहना दुश्वार हो गया है। बिजली के कारण इस बस्ती में एक खतरनाक परेशानी भी है। जैसा कि आप इस खबर के चित्र में देख सकते हैं कि किस प्रकार बिजली के तार झुग्गी-झोपड़ियों के ऊपर से निकले हुए हैं ? अगर जरा सी भी तेज हवा चले या कोई पक्षी उस बिजली के तार पर बैठ गया तो वह तार सीधे झुग्गी पर ही गिर सकते हैं। मुश्किल बात यह है कि सभी झुग्गी टीन की चादर की बनी हुई हैं।

अगर झुग्गी पर तार गिर गए तो उस झुग्गी में रहने वाले लोगो की जान भी जा सकती है। जब पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप अपने ठेकेदार से क्यों नहीं बोलते हो कि इसे सही करवाएं ? इस पर बच्चों का कहना है कि हमारे माता-पिता ठेकेदार जी से कई

बार इस परेशानी को लेकर चर्चा किये, लेकिन ठेकेदार इस बात को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। उनका कहना है कि अगर तुम्हें कोई परेशानी हो रही है, तो तुम इस झुग्गी को खाली करके कहीं दूसरे स्थान पर जा सकते हो। माता-पिता का कहना है कि अगर हम इस स्थान से झुग्गी-झोपड़ी खाली करके चले गए, तो हमारी रोजी रोटी बंद हो जाएगी। इसलिए हम इन कठिनाईयों से जूझते हुए इस स्थान पर रह रहे हैं। हमें हमेशा भय लगा रहता है कि कहीं कुछ हादसा नहीं हो जाए, जिसकी वजह से हमें किसी परेशानी का सामना ना करना पड़े।

कैसे रहेंगे; इस बस्ती के बच्चे सुरक्षित ?

रिपोर्टर: किशन

हमारे पत्रकार जब अपने भम्रण के दौरान घर वापस लौट रहे थे, तभी देखा कि दो-तीन बच्चे सड़क के किनारे काफी उदास बैठे थे। यह देखते हुए पत्रकार उन बच्चों से मिलने के लिए जा पहुंचा और उन बच्चों से बातचीत करने की कोशिश किया, लेकिन वह बच्चे पत्रकार से कुछ नहीं बोल रहे थे। पत्रकार के काफी पूछताछ करने पर बच्चों ने बताया कि भईया आप तो जानते हैं कि नोएडा में कुछ बस्ती टीन की झुग्गी की बनी हुई हैं जिसकी वजह से अगर हल्की भी हवा चले या किसी बच्चे ने ईंट-पत्थर फेंका तो काफी तेजी से आवाज़ आती है। इसकी वजह से अगर हम सो भी रहे होते हैं, तो हमारी नींद उस आवाज़ की वजह से खराब हो जाती है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि कुछ बस्ती में झुग्गियों के पास कुछ बड़े-बड़े पेड़ पौधे लगे हुए हैं, जिससे तेज आंधी आने पर झुग्गी के ऊपर गिरने की संभावना रहती है। इसलिए हम बच्चे यहां उदास बैठे हैं और इसी परेशानी के बारे में सोच रहे थे कि इस

परेशानी से किस प्रकार निपटा जाए। लेकिन हम बच्चों को इस परेशानी का कोई सामाधान नहीं मिल रहा है। इस विषय को लेकर हमारे माता-पिता भी चिंतित रहते हैं। बच्चों ने बताया कि इस बस्ती में कई परेशानियों का हमें सामना करना पड़ता है; जैसे कि जब काफी तेज आंधी आती है, हमारी झुग्गी में काफी धूल-मिट्टी फैल जाती है और भी जो हमारे खाने-पीने के पदार्थ होते हैं, वह भी धूल-मिट्टी के कारण खराब हो जाते हैं। बच्चों का यह भी कहना है कि हमारे माता-पिता दूसरों के घरो में काम करने के लिए भी जाते हैं, जिसकी वजह से सुबह सुबह उठकर अपने घर के काम खत्म करते हैं और रात को थके-थकाए घर वापस लौटते हैं। इसलिए कुछ सामान बाहर ही भूल जाते हैं जैसे कि कपड़े। कई बार आंधी आने के कारण वह कपडे.भी उड़ जाते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमें कहीं सुरक्षित स्थान प्रदान किया जाए, जहां हम अपने परिवार के साथ सुरक्षित रह सकें।

क्या इन बच्चों का सपना; हो सकता है साकार?

रिपोर्टर: किशन

वर्तमान में एक दिल दहला देने वाली खबर सामने आई है कि छोटे छोटे बच्चे जिनकी उम्र 13 से 14 साल की है वह बच्चे अपने माता-पिता के साथ खेतो में कड़ी मेहनत कर रहे हैं। इस प्रकार बच्चे कार्य की ओर क्यों बढ रहे है ? जानते हैं इस खबर के माध्यम से। इन्ही बच्चों में से किसी एक 13 वर्षीय बालक का कहना था कि हमारे माता-पिता सालाना 7000 रुपए जमीनदार को देते हैं और फिर उनसे खेत लेते हैं, फिर हमें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। हम आपको बता दें कि अगर किसी प्रकार की लापारवाही किया तो हमें बहुत भारी नुकसान हो सकता है, क्योंकि हम साल में दो फसल ही उपजा पाते हैं। अगर हम मेहनत नहीं किए तो हमारा काफी नुकसान होता है। इसलिए हम और हमारे माता-पिता पूरे दिन खेतों में मेहनत करते रहते हैं। हम बच्चों को इस कार्य में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि जब हम मिट्टी खोदने वाले हथियार का उपयोग करते हैं, तो हमारे हाथो में लाल छाले पड़ जाते हैं और वह छाले काफी दर्द करते हैं। बच्चों ने एक बड़ी समस्या बतायी कि जिस प्रकार वर्तमान में गर्मी पड़ रही है, इस गर्मी से भी हम बच्चों को बहुत दिक्कत हो रही है। कहने को तो हर एक खेत के पास पानी की बोरिंग लगी हुई है लेकिन यह पानी की बोरिंग चलाने वाला व्यक्ति काफी परेशान करता है। वह समय पर पानी नहीं देता है और अगर कभी कभी पानी खेतो में दे भी दिया तो अधिक पैसों की मांग करता है, जो हमारे परिवार को देने में बहुत कठिनाई होती है। इसलिए हम आस-पास नालियों की तलाश करते हैं और उन्हीं नालिया में पाईप के माध्यम से पानी को खेतो में डालते हैं, ताकि फसल सुरक्षित रह सके। हम बच्चे इस काम की वजह से स्कूल नहीं जा पाते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि इस काम से मुक्ति पाएं और शिक्षा प्राप्त करें।

बच्चों की यह मांगें; क्या होंगी पूरी?

बातूनी रिपोर्टर: वासिका व रिपोर्टर: पूनम

आगरा के एक क्षेत्र में भम्रण करने के दौरान पता चला कि जिस प्रकार वर्तमान में गर्मी पड़ रही है उसकी वजह से आगरा के कुछ क्षेत्र में रहने वाले बच्चों का रहना दुश्वार हो रहा है। उस क्षेत्र में रहने वाले बच्चों का कहना है कि इस क्षेत्र में कभी-कभी लाईट आती है और कभी पूरे-पूरे रात, दिन तक लाईट गायब रहती है। इसकी वजह से बच्चे व उनके माता-पिता सही प्रकार रह भी नहीं पाते हैं।

बच्चों का कहना है कि लाईट आती भी है तो हमारी परेशानी और भी बढ़ जाती है। क्योंकि जिस क्षेत्र में बच्चे रहते हैं, उस क्षेत्र में बिजली के तार इधर से उधर लटके पड़े. हुए हैं, और अधिक गर्मी पड़ने की वजह से वह तार गर्म हो जाते हैं और हल्की भी हवा चलती है तो वह तार आपस में टकराने के कारण उन तारो में से चिनगारियां निकलने लगती हैं, जिसकी वजह से कई बार आग लगते-लगते बची है। लेकिन हम जैसे-तैसे करके इस परेशानी से निपट लेते हैं। हम क्षेत्र निवासी चाहते हैं कि इस क्षेत्र का जो बिजली देखरेख डिपार्टमेंट है, वह

हमारे क्षेत्र में आए और हमें सहयोग करे, इस तार को सही प्रकार से लगाने में; ताकि हम सभी बच्चे अपने परिवार के साथ कुशलपूवर्क रह सकें। क्योंकि एक चैंका देने वाली बात सुनने में आयी कि इस क्षेत्र के अधिकतर माता-पिता अपने-अपने कामकाज करने के लिए बाहर चले जाते हैं जिसकी वजह से इनके बच्चे घर पर अकेले ही होते हैं। उनका ध्यान अपने मासूमों पर रहता है। इसलिए सभी जन चाहते हैं कि इस संबंध में जल्द-से-जल्द कार्यवाही हो, ताकि क्षेत्र में रहने वाले सभी प्राणी कुशलपूवर्क रह सकें।

पिताजी की शराब लाने के लिए; मासूम बच्चे मजबूरी में कर रहे इस काम को

रिपोर्टर: पूनम

बालकनामा के पत्रकार ने आगरा की एक बस्ती में दौरा किया, तो पता चला कि खासकर 12 साल से 13 साल की उम्र के बच्चे जूता बुनाई के कार्य से जुड़ रहे हैं। ऐसा क्यों हो रहा है ? इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है। आईए इन्हीं बच्चों से जानने का प्रयास करते हैं। जब हमारा पत्रकार 12 वर्षीय बच्चे को जूते की बुनाई करते हुए देखा, तो चैंक गया। उस बच्चे का गर्मी होने के कारण पूरा शरीर पसीना से गीला था, फिर भी वह काम कर रहा था। जब हमारे पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप इतने छोटे हो, आपको इस काम को करने की क्या आवश्यकता पड़ गयी ? बच्चे ने अपनी पीढ़ा पत्रकार के सामने रखते हुए कहा कि हमारे घर में बहुत परेशानी है। जैसे कि हमारे परिवार में सिर्फ माताजी ही कामकाज करने के लिए बाहर जाती हैं, जिसकी वजह से पारिवारिक खर्चा निकालने में बहुत कठिनाई होती है। इसलिए हमारी माताजी हमें इस काम में लगा दी हैं, ताकि घर का खर्चा ठीक से चल सके। पत्रकार ने यह बात सुनते हुए बच्चों से पूछा कि आपके पिताजी काम नहीं करते हैं क्या ? बच्चों ने बताया कि यदि हमारे पिताजी काम करते तो हम बच्चों को काम करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। हमारे पिताजी पूरे दिन गांव के कुछ दुष्ट लोगों के साथ जुआ व शराब पीते रहते हैं। जैसे ही शराब खत्म हो जाती है, तो घर में आकर लड़ाई झगड़ा करने लगते हैं और पैसे की मांग करते हैं। जब हमारी माताजी उनको पैसे नहीं देती हैं, तो हम बच्चों को भी मारने के लिए दौड़ते हैं। इस परेशानी से जूझते हुए हमारी माताजी उनको पैसे दे देती हैं। बच्चों ने बताया कि हम बच्चों को इस काम को करने में बहुत परेशानी होती है। क्योंकि कभी-कभी हमारी उंगलियों में सुई चुभ जाती है जिसकी वजह से उंगलियों में से खून भी निकल जाता है और अगले दिन जब हम खाना खाते हैं या किसी भी कामकाज को करते हैं, तो हमें बहुत परेशानी होती है। लेकिन दुख की बात यह है कि हमें एक जोड़ा जूता की बुनाई करने पर सिर्फ 2 रुपए मिलते हैं। इसलिए हम बच्चों को काफी मेहनत करनी पड़ती है, ताकि घर का खर्चा व पिताजी की शराब ला सकने लायक रुपये मिल सकें।

कैसे पाएं; इन मक्खियों से मुक्ति?

रिपोर्टर: शम्भू

ईस्ट दिल्ली के कई स्थानों पर भ्रमण करने के दौरान पता चला कि इन सभी बस्तियों में मक्खियां बहुत तेजी से बढ़ रही है। इस विषय को लेकर इस बस्ती में रहने वाले बच्चे भी काफी परेशान हैं। बालकनामा के पत्रकार ने जब यह बात सुनी तो उसने खुद विजिट किया और देखा कि वाकई बस्ती में काफी मक्खियां हैं। घर में व जिस स्थान पर भोजन रखा होता है, विशेष कर उन स्थानों पर काफी मक्खियां पनप रही हैं। जब इस विषय को लेकर बच्चों से बातचीत की तो बच्चों का कहना है कि बस्ती में रहने वाले कुछ लोगों की गलती की वजह से भी यह मक्खियां फैल रही हैं। क्योंकि बस्ती में रहने वाले लोग जो घरेलू कूड़ा-कचरा उपयोग करते हैं, वह कूड़ा-कचरा बस्ती के बाहर रख देते हैं जिसकी वजह से मक्खियां बहुत तेजी से फैलने लगती हैं। इस वजह से हम बच्चों की जिंदगी दुश्वार हो गयी है। क्योंकि जब हम भोजन को खा रहे होते हैं, तो मक्खियां हमारे भोजन में भी आकर बैठ जाती हैं और हमारे माता-पिता जो भोजन हम बच्चों के लिए बनाकर रख जाते हैं। उस खाना को हम बच्चे अगर ऐसे ही खुला छोड़ देते हैं, तो उस भोजन में भी मक्खियां बैठ जाती हैं जिसकी वजह से हमें भोजन खाने को मन नहीं करता है। उसे देखकर उल्टी करने का मन करता है। 15 वर्षीय बालक का कहना था कि जब हम अपने आंगन में चारपाई लगाकर सो रहे होते हैं तो हमारे पूरे शरीर में भी मक्खियां चिपक जाती हैं, जिसकी वजह से हमें बहुत घृणा होती है। हम चाहते हैं कि हमारी बस्ती में कुछ दवाई का छिड़काव किया जाए, ताकि हम इन मक्खियों से मुक्ति पा सकें।

बाल मजदूरी में दो बच्चे हुए शामिल; पढ़ाई के बहाने लाया था ठेकेदार

रिपोर्टर: शम्भू

हमारे पत्रकार ने एक स्थान पर सर्वे किया, उस दौरान पता चला कि बच्चों की संख्या बालमजदूरी की ओर बढ़ती ही जा रही है। जब हमारे पत्रकार इस विषय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए बच्चों के पास पहुंचे तो जिस दुकान या ढाब्रे पर बच्चे काम कर रहे थे, उस दुकान के मालिक ने बच्चों से बातचीत करने नहीं दी। फिर भी पत्रकार ने अपनी हार नहीं मानी। कई दिन तक लगातार दौरा किया और बच्चे से मिलने की कोशिश करते रहे। हर बार नाकामयाब होते रहे। जब भी पत्रकार बच्चे से बातचीत करने की कोशिश करते थे, तो उस दुकान का मालिक कहता था कि अरे सर यह बच्चा इस दुकान पर काम नहीं कर रहा है। यह तो हमारे गांव से शहर कुछ दिन के लिए घूमने के लिए आया है, फिर चला जाएगा। कुछ दिनों के बाद पत्रकार को बच्चों से बातचीत करने का अवसर प्रदान हुआ। उस दिन दुकान के मालिक किसी काम से बाहर गए थे। इसलिए पत्रकार बच्चे से बातचीत किया और पूछा कि आप बच्चे इस प्रकार इस दुकान पर क्यों काम कर रहे हो? बच्चा बहुत घबराया हुआ था लेकिन बच्चों ने विस्तार से बताया कि किस प्रकार उस पूरे दुकान पर काम करने के दौरान गुजरते हैं। बच्चे का कहना है कि वह इस कामकाज से खुश नहीं है। उनके साथ सही व्यवहार नहीं हो रहा है।

दुकान मालिक इन बच्चों से कभी भी प्यार से बातचीत नहीं करते हैं। अगर कुछ गलत हो जाते है, तो मारने के लिए दौड़ते हैं।

बच्चों से पूछने पर पता चला कि यह उत्तर प्रदेश व कुछ बच्चे बिहार के रहने वाले हैं।

इन बच्चों के माता-पिता को लालशा देकर आते हैं कि हम तुम्हारे बच्चों को शहर ले जाकर पढ़ाई-लिखाई करवाएंगे, लेकिन शहर आने के बाद बच्चों से बालमजदूरी करवाते हैं। जब चेतना संस्था के कार्यकार्ता उन दुकानदार से बातचीत किया तो उनको काफी समझाने के बाद उनके व्यवहार में बदलाव नजर आया। वर्तमान में वह दुकानदार बच्चों को संस्था के कार्यकर्ता के पास पढ़ाई-लिखाई करने भेजता है और पूरे ध्यान पूर्वक देख भाल करता है और वह बच्चा गांव भी होकर आया है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

कैसे पाएं; हम खेलने का अधिकार?

बातूनी रिपोर्टर: फिरोज व रिपोर्टर: शम्भू

पत्रकार ने सर्पोट ग्रुप मीटिंग की। इसमें मींटिंग में सभी ने बढ़चढ क र हिस्सा लिया और अपनी परेशानी को विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि गुरूग्राम की बस्ती में 300 से अधिक झुग्गी-झोपड़ी हैं। इस बस्ती में रहने वाले सभी माता-पिता कामकाजी हैं। यह लोग दूसरे स्थान से इस स्थान पर कमाने के लिए आए हैं। इनका कहना है कि हमारे यहां कामकाज तो बहुत है लेकिन उस कामकाज के लोग पैसे बहुत कम देते हैं। इसलिए जिस स्थान पर कमाने खाने का जरिया नजर आता है, हम उसी स्थान जाकर कामकाज करते हैं, ताकि हमारे परिवार का गुजारा हो सके, इसलिए गुरूग्राम की एक बस्ती में रहकर इसी प्रकार से जिंदगी गुजार रहे हैं। लेकिन इस स्थान पर माता-पिता को तो कामकाज मिल गया, लेकिन इनके बच्चों को बहुत परेशानी हो रही है। बच्चों को कहना है कि यहां तो खाली खेत ही खेत नजर आते हैं। हमारे माता-पिता उस खेतों की ओर खेलने के लिए मना करते हैं। इसलिए हम बच्चे बस्ती के बाहर एक छोटा सा मैदान है, हम बच्चे वहां खेलते हैं। इसी मैदान के पास एक दुष्ट व्यक्ति मछली की दुकान लगाता है। वह हम बच्चों से बहुत नफरत करता है। एक दिन की बात है। हम पांच बच्चे

मिलकर किक्रेट खेल रहे थे, तभी हमारी गेंद उनके दुकान के पास चला गया। हमने देखा कि उनके किसी भी सामान को हानि नहीं पहुंची थी लेकिन फिर वह हमारी गेंद लेकर मछली काटने वाले हथियार से हमारी गेंद काट दिया। यह हमें बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा। अभी भी हम कभी खेलने के लिए जाते हैं, तो मारने के लिए दौड़ते हैं। इस संबंध में हमारे माता-पिता ने उससे बातचीत की तो वह व्यक्ति हमारे माता-पिता से भी लड़ाई करने लगा। वह झूठ बोलता है कि तुम्हारे बच्चे यहां खेलते हैं। हमारे सामान को नुकसान पहुंचता है। इसलिए मैं बच्चों को परेशान करता हूं।

क्या हम पा सकते हैं; इस परेशानी से मुक्ति?

रिपोर्टर: शम्भू

सपोर्ट ग्रुप मींटिंग में बातूनी रिपोर्टरों की बैठक। इस बैठक में बड़ी ही गंभीर समस्याओं पर चर्चा हुई। सभी बातूनी रिपोर्टर अपनी-अपनी समस्या बता रहे थे। इस मींटिंग में उपस्थित एक 15 वर्षीय बालिका गुमसुम थी। वह कुछ भी नहीं बोल रही थी। वह बालिका हर मींटिंग में भाग लेती है और हर समय बोलती ही रहती थी, लेकिन इस मींटिंग के दौरान ऐसा क्यों ? आईए सुनते हैं इसी बालिका से कि आखिर यह गुमसुम क्यों है ? काफी बातचीत करने के बाद बालिका ने हमें बताया कि भईया आप से क्या छुपाना। आप तो जानते ही हो कि किस प्रकार हमारे माता-पिता ने स्कूल में दाखिला दिलाया है लेकिन वर्तमान में हमें एक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उसकी वजह से हमें स्कूल जाने का मन नहीं करता है। हम फिर भी उस कठिनाई से जुझते हुए स्कूल जा रहे हैं। विस्तार से पूछने के बाद

बालिका ने बताया कि हमारे स्कूल के साथ लड़कों का भी स्कूल है जिसमें कुछ लड़के बहुत शरारती हैं। वह हम बालिकाओं को देखकर अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हैं, जो हमें बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता है। हमारे स्कूल की जब छुट्टी होती है, यह लड़के लोग हमारा पीछा करते हैं और सड़क पर हमारे हाथ पकड़ लेते हैं। हमें नहीं पता कि यह लड़के लोग हमारे साथ इस प्रकार का व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? हम यही चाहते हैं कि इस प्रकार हमारे साथ व्यवहार न हो ? क्योंकि इस वजह से हम बालिकाएं बहुत परेशान हैं।

इस प्रकार करते हैं; बच्चे गुजारा

रिपोर्टर: किशन

पत्रकार कुछ ऐसे बच्चों से मुलाकात किया, जो बस अड्डे जैसी भीड़भाड वाले स्थानों पर सामान बेचने के लिए जाते हैं। सभी बच्चों ने अपनी परेशानियों को रखते हुए कहा कि हम बच्चे काफी दूर-दूर तक सामान बेचने के लिए जाते हैं। परेशानी यह है कि कभी सामान बिकता है और कभी कुछ भी नहीं बिकता है, तो हम बच्चों को काफी मेहनत करनी पड़ती है। सामान अधिक बिके, इसलिए हम बच्चे छोटे वाहनों के अंदर सामान बेचने के लिए जाते हैं, लेकिन फिर भी सामान बहुत कम बिकते हैं। इसलिए बच्चों ने सोचा कि अब से हम बड़े वाहनों के अंदर सामान बेचेंगे। इस प्रकार की सोच से भी इन बच्चों की परेशानियों का हल नहीं निकला। क्योंकि जब यह वाहन के अंदर सामान बेचने के लिए जाने लगे तो कार्मचारी भी इन बच्चों को परेशान करने लगे। उनका कहना है कि तुम वाहन के अंदर सामान नहीं बेचो। मजबूरन हम बच्चों को सामान बेचना पड़ता है। हम बच्चों ने कार्मचारी को समझाया कि अगर हम बच्चे यह काम नहीं करेंगे तो हमारे परिवार का खर्चा कैसे निकलेगा ? हमारी परेशानी है इसलिए हम बच्चे वाहन के अंदर सामान बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं। 14 वर्षीय बालक का कहना है कि भईया जब हम सामान बेचने के लिए वाहन के अंदर जाते हैं, तो वाहन यात्रियों से भरा हुआ होता है। इसलिए हमारा सामान कभी-कभी वाहन के अंदर गिर भी जाता है। काफी भीड़भाड़ होने की वजह से कभी कभी हम वाहन से उतर नहीं पाते हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान चले जाते हैं, जिससे हम बच्चों को बहुत भय लगा रहता है कि क्या हम सुरक्षित अपने घर लौट पाएंगे। वापस घर लौटने पर दूसरे वाहन में चढ़ना पड़ता है। इसलिए वह काफी पैसों की मांग करते हैं। अगर हम उनसे बोलते हैं कि हमारे पास इतने पैसा नहीं हैं, तो वह वाहन से उतारने की धमकी देते हैं और कभी-कभी धक्का भी दे देते हैं।

क्या इस परेशानी से मुक्ति पाएगा यह बच्चा?

बालकनामा ब्यूरो

हमारा पत्रकार भ्रमण के दौरान एक ऐसे बच्चे से मिला, जो अपने परिवार का खर्चा चलाने के लिए काफी मेहनत करता है; लेकिन फिर भी वह कुशलपूर्वक अपने परिवार का खर्चा नहीं निकाल पाता है। आईए इस संबंध में विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। जब हमारा पत्रकार उस बच्चे से बातचीत किया, तो बच्चे ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि हमारे परिवार में लोगों की संख्या बहुत अधिक है। इसलिए मुझे काम करने पड़ते हैं। मेरे पिताजी भी हमारे साथ नहीं रहते हैं। वह अपने गांव में रहना पसंद करते हैं। हमारे परिवार से उनको कोई मतलब नहीं है। मेरी मम्मी कभी कभी मेरे साथ मछली बेचने के लिए जाती थीं लेकिन जिस स्थान पर हम मछली बेचने के लिए जाते हैं, वहां एक दुष्ट व्यक्ति है जो लोगों से हफ्ता मांगने का काम करते हैं।

इस प्रकार वह दुष्ट व्यक्ति मेरे पास भी आए लेकिन दुष्टता की बात यह कि उसने मेरी मम्मी जी, जो मछली बेचने के लिए आई थीं, वह मेरी मम्मी से हफ्ता मांगने लगा और हफ्ता नहीं देने पर गलत व्यवहार से बात करने लगा। इसलिए अब सिर्फ मैं ही मछली बेचने के लिए जाता हूं। मेरी मम्मी जी बाजार से मछली ला देती हैं और मैं जाकर बेचता हूं। लेकिन दुख की बात यह है कि अभी भी वह दुष्ट व्यक्ति परेशान करते हैं। जब पुलिस वाले भईया आते हैं, तो मछली की टोकरी फेंक देते हैं जिसकी वजह से हमारा बहुत नुकसान होता है। मेरी इन सभी लोगों से गुजारिश है कि इस तरह का व्यवहार न करें और हमें भी कुशलपूर्वक रहने दें।

माता-पिता की इस सोच ने मजबूरन कराया काम

बातूनी रिपोर्टर: रूकसार व रिपार्टर: शम्भू

नोएडा का एक स्थान, जहां काफी सारे कामकाजी बच्चे रहते हैं। उनके माता-पिता भी तरह-तरह के कामकाज की तलाश में लगे रहते हैं फिर भी बहुत मुश्किल से कामकाज मिलते हैं। लेकिन दुख की बात यह है कि जो भी कामकाज उन बच्चों के माता-पिता को मिलते हैं, उस काम को यह अधिक समय तक नहीं कर पाते हैं। इनको या तो घर जाना पड़ता है; या फिर किसी दूसरे कामकाज की तलाश के लिए दर-दर भटकना पड़ता है। इसलिए यह अपने बच्चों के भविष्य को लेकर काफी चिंतित रहते हैं। सुनने में आया कि जिस प्रकार यह लोग कामकाज की तलाश में दर-दर भटकते रहते हैं, उसी प्रकार इनके बच्चों को न भटकना पड़े, इसलिए इन्होंने अपने बच्चों को अभी से कुछ ऐसे कामकाज सिखा रहे हैं, जो बच्चों के भविष्य में उपयोगी हों। आईए सुनते हैं बच्चों से

कि उनके माता-पिता कौन सा ऐसा कामकाज सिखा रहे हैं जो भविष्य में इस्तेमाल कर सकते हैं। बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि यह बच्चे बिजली का कार्य सीख रहे हैं। जैसे कि कूलर, पंखा व ए सी आदि मरम्मत करना। माता-पिता का कहना है कि हर काम बंद हो सकता है लेकिन इन कामों की आवयश्कता हमेशा पड़ेगी। क्योंकि हमारे समाज में इन चीजों की मांग दिन पर दिन बढ़ रही है। हम बच्चे इस काम से संतुष्ट नहीं हैं। बच्चों का कहना है कि इस काम को सीखने में बहुत परेशानी होती है; क्योंकि हर एक दुकान पर बड़े कारीगर होते हैं जिन्हें हम उस्ताज के नाम से जानते हैं। वह दुकान पर देर से आते हैं और दुकान खोलना व बंद करना हम बच्चों को ही पड़ता है। दुकान के अंदर जो सामान होते हैं, जैसे कूलर, पंखा आदि, यह हमें बाहर रखना पड़ता है। इसमें हमे बहुत परेशानी होती है। क्योंकि यह सामान काफी भारी होते हैं और बच्चों से उठाया नहीं जाता है। अगर कोई सामान टूट जाता है तो दुकान मालिक मारने के लिए दौड़ते हैं और गाली गलौज करते हैं। इसलिए हम बच्चों को यह काम करना बिल्कुल पसंद नहीं है लेकिन माता-पिता की इस सोच की वजह से हमें मजबूरन यह काम को करना पड़ता है।

आपकी एक मदद भेज सकती है इन बच्चों को शिक्षा की ओर

रिपोर्टरः संगीता

हमारे माता-पिता हम बच्चों के लिए कितना कुछ करते हैं, जैसे कि हमारे लिए ही सुबह-सुबह उठ कर कामकाज के लिए बाहर जाते हैं। पूरे दिन कामकाज करने के बाद रात को लौटते हैं। लेकिन इस बार जो हमारा लखनऊ का पत्रकार खबर लाया है, वह बहुत ही अद्भूत है। हमें पता चला कि दो बच्चे ऐसे हैं जिनकी उम्र 10 से 12 साल की है। यह बच्चे अपने पिताजी का इलाज कराने के लिए कूड़ा-कबाड़ा बीनते हैं, ताकि वह बच्चे अपने पिताजी का इलाज करा सकें। जब हमारे पत्रकार ने उन दोनो बच्चों से पूछा कि आपके घर में और कोई बड़ा व्यक्ति नहीं है, जो कामकाज कर सके ? फिर उन दोनों बच्चो ने बताया कि मेरे पिताजी के शिवाय कोई नहीं है। इसलिए तो हमें इस परेशानी झेलनी पड़ती है। उन दोनो बच्चों ने पत्रकार से पूछा कि आप क्या करते हो ? पत्रकार ने अपने बारे में बताया कि मैं एक अखबार बालकनामा का पत्रकार हूं और आप जैसे बच्चों के लिए काम करती हूं, साथ ही साथ पढ़ाई लिखाई करती हूं। यह बात सुनते ही उन दोनो बच्चों ने बताया कि पढ़ाई-लिखाई करने का तो हमारा भी बहुत मन करता है लेकिन पारिवारिक स्थिति खराब होने के कारण पढ़ाई लिखाई नहीं कर पाते हैं। हम यही चाहते हैं कि कोई भईया-दीदी हमारे पिताजी के इलाज के लिए सहयोग करे, ताकि हमारे पिताजी ठीक हो जाएं और हमें कामकाज करने की जरूरत न पड़े, तभी आप की तरह स्कूल जा सकता हूं और पढ़ाई-लिखाई कर सकता हूं।

क्या आप करेंगे; इस बालिका की इच्छा को पूरा?

बातूनी रिपोर्टरः सुनीता व रिपोर्टरः संगीता

लखनऊ से हमारे पत्रकार के द्वारा खबर मिली कि कुछ बस्ती ऐसी हैं, जहां दिन भर लोग जुआ खेलते रहते हैं। उसी बस्ती में रहने वाले बच्चों को कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है, उसे आप सोच भी नहीं सकते हो ? एक 16 वर्षीय बालिका ने अपनी जिंदगी के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत खबरा है, क्योंकि इसके माता की मृत्यु हो गयी है। पिताजी वो भी काम करते हैं लेकिन फिर भी घर का खर्चा पूरा नहीं हो पाता है। क्योंकि परिवार में लोगों की संख्या ज्यादा है और कमाने वाले सिर्फ दो हैं। इस बालिका ने बताया कि मैं अपने परिवार का खर्चा पूरा करने के लिए दूसरे के घरों में झाड़ू पोछा का करती हूं लेकिन फिर भी परिवार का खर्चा निकालने में परेशानी हेती है लेकिन जैसे तैसे करके मैं अपने परिवार का खर्चा निकाल रही हूं। बालिका ने बताया कि मुझे पढ़ाई लिखाई करना बहुत पंसद है लेकिन घर की परिस्थिति को देखते हुए सही प्रकार से पढ़ाई लिखाई नहीं कर पा रही हूं। लेकिन कुछ माह से सामाजिक संस्था के कार्यकर्ता हमारी बस्ती में पढ़ाने के लिए आते हैं तो मैं उन्ही के पास पढ़ाई लिखाई करने के लिए जाती हूं और कभी-कभी नहीं भी जा पाती हूं; क्योंकि जैसे कि हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं कि हमारी बस्ती में कुछ लोग जुआ खेलते रहते हैं जिसकी वजह से हमें घर से निकलने में भी परेशानी होती है। जुआ खेलने वाले व्यक्ति आपस में गाली गलौज करते रहते हैं, जो हमे बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता है। हम चाहते हैं कि हमारी बस्ती में जुआ खेलने वाले व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही हो, ताकि वे जुआ खेलना बंद हो जाएं। यह भी अपील करती हूं कि कोई भईया-दीदी मुझे मदद करें, ताकि हम पारिवारिक परिस्थिति से छुटकारा पाकर पढ़ाई लिखाई कर सकें।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

आप भी मना सकते है सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ अपना जन्म दिवस

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471